**International Journal of Multidisciplinary Education and Research**
**ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12**
**www.educationjournal.in**
**Volume 1; Issue 9; November 2016; Page No. 05-07**

# रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

**[1] मनीष कुमार त्रिपाठी, [2] डॉ0 जय सिंह**

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य पदेश, भारत।

[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य पदेश, भारत।

**सारांश**

विद्यार्थी राष्ट्र की सम्पत्ति और उसके भावी कर्णधार होते है। उनके मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक आदि सभी प्रकार के निर्माण एवं विकास का उत्तरदायित्व अध्यापक पर होता है। छात्र बगीचे के पौधे के समान है, अध्यापक माली है, जो उस पौधे को सींचते हैं, एवं उनकी कांट–छांट करते हैं तथा अन्य सब प्रकार से उनकी देखभाल करते है। शिक्षा के आधुनिक मनोविज्ञान में संवेगो का प्रमुख स्थान है। संवेग हमारे सब कार्यो को गति प्रदान करते है और शिक्षक को उन पर ध्यान देना अति आवश्यक है। संवेग क अभाव में मानव–मस्तिश्क अपनी किसी भी शक्ति को समाप्त करने में असमर्थ रहता है। अतः शिक्षक का प्रमुख कर्त्तव्य है कि बालकों में उचित संवेगो का निर्माण और विकास करे। शोध क्षेत्र के 70.00 प्रतिशत प्राचार्य, 62.50 प्रतिशत शिक्षक व 65.00 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

**मूल शब्द :** रीवा संभाग, हाई स्कूल, विद्यार्थी, संवेगात्मक, बुद्धि एवं शैक्षणिक उपलब्धि।

## प्रस्तावना

शिक्षा के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित कर सकता है। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण तथा चरित्र को उत्कृष्ठ बनाती है। शिक्षा एक साधन है, जो व्यक्ति के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक बौद्धिक एवं आंतरिक ज्ञान को बाहर लाने में योग देने वाली एक क्रिया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा ऐसा परिर्वतन लाती है। जिससे वह निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकता है।

सामान्यतः यह समझा जाता है कि व्यक्ति की सफलता एवं उपलब्धियाँ उसकी बुद्धि पर आधारित होती हैं। जिसकी बुद्धि लब्धि अधिक होती है, सामान्यतः उसकी जिन्दगी की उपलब्धियाँ भी अधिक होती हैं। परन्तु आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति को अपनी जिन्दगी में जो भी सफलता प्राप्त होती है, उसका मात्र 20 प्रतिशत ही बुद्धि लब्धि के कारण होता है और 80 प्रतिशत सांवेगिक बुद्धि के कारण होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि सांवेगिक बुद्धि क्या है? संवेगात्मक बुद्धि से आशय व्यक्ति द्वारा स्वयं के तथा दूसरे के संवेगों को समझना, उनका प्रबन्धन करना तथा उनको नियन्त्रण करने से होता है।

संवेगात्मक बुद्धि दो शब्दों 'संवेग' तथा 'बुद्धि' से मिलकर बना है, संवेग तथा बुद्धि एक दूसरे के सहयोगी तथा परस्पर समांतर क्षमतायें है। संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं की तीव्रता, बुद्धि को सही दिशा में विचार करने हेतु प्रेरित करती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को उसकी अद्वितीय क्षमताओं तथा उद्देश्यों का अनुसरण करने की प्रेरणा प्रदान करती है तथा उसकी अंतःस्थित क्षमताओं, आंकाक्षाओं तथा मूल्यों को क्रियाशील बनाती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि वह स्वयं तथा दूसरे व्यक्तियों की भावनाओं को पहचान तथा समझ सके तथा उनके प्रति उचित व्यवहार कर सकें। संवेगात्मक बुद्धि के कारण ही व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में प्रभावी रू‍प से संवेगों की उर्जा तथा सूचना का प्रयोग करता है।

शिक्षा व्यक्ति के विचारों को जो कि सांवेगिक एवं बौद्धिक होते है कि पूर्ण अभिव्यक्ति में सहायक होता है, इसके द्वारा बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण, सहानुभूति, स्वआत्मन, स्वप्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, तनाव नियंत्रण, आदि करना सीखता है एवं इसके द्वारा उपयुक्त निर्णय लेकर प्रत्येक क्षेत्र में समायोजित होकर अच्छा प्रदर्शन करता है। जिन बालकों अथवा छात्रों में संवेगात्मक स्थिरता का अभाव होता है तथा वातावरण के साथ समायोजन करने में वे कठिनाई का अनुभव करते है। अतः शिक्षा द्वारा छात्रों को सांवेगिक रूप से परिपक्व बनाकर उन्हें वातावरण में उचित समायेजित किया जा सकता है।

शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्ति में सांवेगिक बुद्धि का होना आवयश्यक है जिस व्यक्ति की सांवेगिक बुद्धि जितनी अच्छी होगी उस व्यक्ति की शैक्षिक उपलब्धि एवं सफलता उतनी अच्छी होगी। वह व्यक्ति उतना ही ज्यादा सफल होगा और जिस व्यक्ति की सांवेगिक बुद्धि जितनी कम होगी वह व्यक्ति उतनी ही कम सफलता प्राप्त करता है। उसकी शैक्षिक उपलब्धि उतनी ही कम होती है। अर्थात् अच्छी उपलब्धि के लिए मनुष्य का सांवेगिक बुद्धि का अच्छा होना आवश्यक है।

संवेग से तात्पर्य उत्तेजना से है अर्थात संवेग शब्द अंग्रेजी शब्द म्उवजपवद का पर्यायवाची है। इसको लैटिन भाषा में म्उवअमतम कहते है। जिसका अर्थ ''हिला देना, उत्तेजित होना है।'' जब भी संवेग की स्थिति आती है, व्यक्ति में बेचैनी आ जाती है, वह कुछ भी असामान्य व्यवहार प्रकट कर सकता है। हृदय की धड़कन बढ़ जाती है, चेहरे पर मलिनता छा जाती है, अचेतन में व्याप्त अनेक सुप्त प्रक्रिया है, जिसमें मानसिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार की प्रक्रियाएँ सम्मिलित है।

बुद्धि के क्षेत्र में यह नया प्रत्यय है। इस प्रकार की बुद्धि से हमारा तात्पर्य उस दक्षता से है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने तथा दूसरे के संवेगों को समझता है, उन्हें प्रेरित करता है और अपने तथा दूसरे के संवेगों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करता है।

## अध्ययन की आवश्यकता

अध्ययन के द्वारा शैक्षणिक दृष्टि से अल्प विकशित रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा की जाएगी, वहीं दूसरी ओर इसमें आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त की जाएगी तथा इन्हें सशक्त बनाने के लिए अपने शोध कार्य में वास्तविक स्थिति का विश्लेषण कर सशक्त प्रभावी सुझाव प्रस्तुत कर सकेगा जिनका उपयोग न केवल शोध क्षेत्र में अपितु सम्पूर्ण देश में शिक्षा के विकास हेतु किया जा सकेगा।

## शोध की परिकल्पनायें

शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

## उद्देश्य

किसी भी शैक्षिक शोध के कुछ निश्चित बिन्दु होते हैं। जिनको प्राप्त करने की दिशा मे शोध उन्मुख होता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य यह है कि जिले में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव की वास्तविक स्थित का अध्ययन करना भी है। प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि की जानकारी प्राप्त करना।
- विद्यार्थियों की उपलब्धि परीक्षण पर उनकी सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।
- हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि के मार्ग में आने वाली समस्याओं व अवरोधों को ज्ञात करना।

## शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र रीवा संभाग है। इसके अन्तर्गत 4 जिले – रीवा, सतना, सीधी व सिंगरौली हैं। अतः संभाग अन्तर्गत स्थित हाई स्कूल स्तर के विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

## अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

## समष्टि व प्रतिदर्श

इस अध्ययन की समष्टि में रीवा संभाग के 04 जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों से 10 ग्रामीण व 10 शहरी विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 160 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 बालक एवं 10 बालिकाएं कुल 1600 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से शोधार्थी ने अपने शोध के लिये चुना है।

## शोध उपकरण

शोधकर्त्ता ने हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

## पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – बानो रेश्मा (2011)[1] ने माध्यमकि स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध और मिथलेश (2013)[2] ने शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके संगठनात्मक नागरिक व्यवहार से संबंध का एक अध्ययन, दिनेश ठाकुर और श्रीमती योगेश (2013)[3] ने विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यर्थियों की बुद्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, राठौर योगिता एवं संस्मति मिश्रा (2015)[4] ने ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार का तुलनात्मक अध्ययन एवं लाखेरा संगीता (2015)[5] ने शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

## प्रदत्त संकलन विधि

प्राथमिक तथ्य सामग्री के संकलन हेतु प्रत्यक्ष साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एवं द्वितीयक तथ्य सामाग्री के संकलन हेतु दस्तावेजी अध्ययन स्त्रोतों यथ विभागीय वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन, पूर्ववर्ती अध्ययन व शोध रिपोर्ट व इंटरनेट व अखवारों के माध्यम से तथ्य संकलन कर शोधकार्य पूरा किया गया है।

## रीवा संभाग का सामान्य परिचय

रीवा नगर भारत के मानचित्र में 24 डिग्री, 32 अंश उत्तरी अक्षांश तथा 81 डिग्री 24 अंश पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1045 फिट है। इस नगर के दक्षिण–पूर्व की ओर बिछिया और दक्षिण–पश्चिम से आती हुई बीहर नदी है। रीवा नगर पूर्व रीवा रियासत की राजधानी रहा है। 4 अप्रैल 1948 को रीवा स्टेट तथा बुन्देलखण्ड की 34 रियासतों को मिलाकर विन्ध्य प्रदेश का निर्माण किया गया था। उस समय इस नगर को नवनिर्मित प्रदेश की राजधानी बनने का गौरव प्राप्त हुआ था। 01 नवम्बर 1956 को जब मध्य प्रदेश का निर्माण हुआ तब इस नगर को सम्भागीय मुख्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ।

## परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

**सारणी क्रमांक 1:** शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

| क्र. | न्यादर्श | न्यादर्श में चयनित संख्या | हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | पड़ता है | | नही पड़ता है | | पता नही | |
| | | | संख्या | प्रति. | संख्या | प्रति. | संख्या | प्रति. |
| 1. | प्राचार्य | 80 | 56 | 70.00 | 08 | 10.00 | 06 | 20.00 |
| 2. | शिक्षक | 160 | 100 | 62.50 | 20 | 12.50 | 40 | 25.00 |
| 3. | छात्र | 1600 | 1040 | 65.00 | 200 | 12.50 | 360 | 22.50 |
| योग | | 1840 | 1196 | 65.00 | 228 | 12.39 | 406 | 22.07 |

स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 70.00 प्रतिशत प्राचार्य, 62.50 प्रतिशत शिक्षक व 65.00 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है और शोध क्षेत्र के 12. 50 प्रतिशत छात्र व शिक्षक तथा 10.00 प्रतिशत प्राचार्य यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव नही पड़ता, जबकि शोध क्षेत्र के 20.00 प्रतिशत प्राचार्य, 25.00 प्रतिशत शिक्षक व 22.50 प्रतिशत छात्रों को शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव के संबंध में पता नही है।

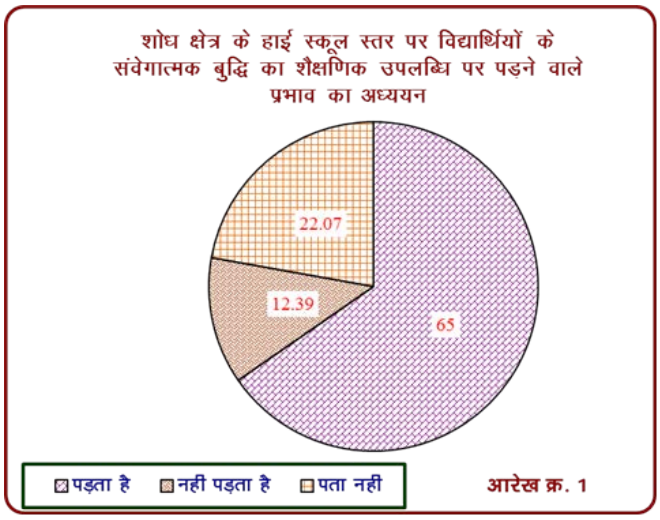


## सांख्यिकीय विश्लेषण : काई वर्ग की गणना

| | हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव | | |
|---|---|---|---|
| आवृत्ति | पड़ता है | नही पड़ता है | पता नही |
| $F_o$ | 65.00 | 12.39 | 22.07 |
| $F_e$ | 33.15 | 33.15 | 33.15 |
| $F_o$-$F_e$ | 31.85 | -20.76 | -11.08 |
| $(F_o-F_e)^2$ | 1014.21 | 431.12 | 122.84 |
| $\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$ | 30.59 | 13.00 | 3.71 |

$$\chi^2 = \Sigma \frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$$

$\chi^2 = 47.33$

## विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेशित किया गया। गणना द्वारा $\chi^2$ का मान 47.33 है, जबकि तालिकामान 1df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

## निष्कर्ष

हमारे शिक्षालय केवल गणित, भाषा, पर्यावरण जागरुकता के विकास के केन्द्र ही नहीं है बल्कि इस बात के लिए भी उत्तरदायी है कि छात्र किस प्रकार अपनी भावनाओं पर काबू करें, किस तरह सामाजिक कार्यक्रमों में सहयोग करें एवं स्वास्थ्य जीवन दर्शन का निर्माण करें। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसहगामी क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक समरसता, संवेदना तथा सामाजिक संज्ञान का भी प्रशिक्षण देना होगा। निश्चित रूप से ये क्रियाकलाप छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि को तीव्र तथा व्यवहारिक बनाने में सहायक सिद्ध होगा। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

## संदर्भ


1. बानो रेश्मा – माध्यमकि स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध. परिप्रेक्ष्य – शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, 2011; 18(2):109-121.
2- मिथलेश – शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके संगठनात्मक नागरिक व्यवहार से संबंध का एक अध्ययन, Recent Educational & Psychological Researches. 2013; (5):269-72.
3. दिनेश ठाकुर और श्रीमती योगेश – विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यर्थियों की बुद्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, सन्दर्भ (वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य), 2013; 3(1).
4- राठौर योगिता एवं संस्मति मिश्रा – ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Multidisciplinary Research and Development, 2015; (2)2:434-436.;
5- लाखेरा संगीता [5] ने शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Multidisciplinary Research and Development. 2015 4(2):1-4.